लिंग, विद्यालय और समाज में परस्पर सम्बन्ध
(Mutual Relationship of Gender, School and Society)

पाठशाला, समाज और परिवार (परिवार के माता-पिता) के मध्य महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध होना चाहिए इसे सभी शिक्षाशास्त्री, शिक्षक विद्यार्थियों के संरक्षक तथा समाज व संस्कृति के नेता भली-भाँति जानते हैं। यह प्रसंग बहुत विस्तृत है। लेकिन हम संक्षेप में इसके प्रमुख विश्लेषणात्मक पक्षों को, जो मूलतः समाजशास्त्रीय प्रकृति के हैं, को इस अध्याय में प्रस्तुत करेंगे।

सुप्रसिद्ध ब्रिटिश शिक्षा समाजशास्त्री **जीन फ्लाउड** का यह महत्त्वपूर्ण कथन है—*"पाठशाला और घर के बीच का सम्बन्ध बालक की शिक्षा सम्भावना की कुंजी होती है।"*

"The relationship between school and home is the key to the educability of the child."

अर्थात् यदि एक पाठशाला और एक विद्यार्थी के घर (परिवार) के साथ उत्तम सम्बन्ध कायम है या बनाया जाता है, तो उससे उस विद्यार्थी की शिक्षा सम्भावनाओं के बढ़ने और उच्चस्तरीय होने की समस्या हल हो जाती है।

(I) भारतीय समाज में स्थिति—हमारे देश में निम्नांकित स्थितियाँ देखने में आती हैं—

- अधिकतर भारतीय माता-पिता अपने पुत्र-पुत्री का पाठशाला जाने से कतराते हैं, विशेषकर निम्न वर्ग के लोग जिनकी संख्या भारत में 75% है वे वहाँ जाने से डरते हैं, झिझकते हैं, क्योंकि वे

Scanned with CamScanner

आशंका रखते हैं कि वहाँ के शिक्षक शिक्षिकाएँ उनकी सन्तानों की शिक्षा प्रगति के बारे में प्रायः कुछ-न-कुछ शिकायतें अवश्य करेंगे और उनमें से कोई उन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दबाव डालेंगे कि वे अपने सन्तानों/विद्यार्थियों को उस/उन शिक्षक से ट्यूशन पढ़ाएँ प्रायः अधिकांश शिक्षकों का ऐसा रवैया ही हमारे देश में है।

- प्रायः सभी नर्सरी स्कूलों में और पब्लिक स्कूलों में विद्यार्थियों को प्रवेश दिलवाने में आजकल बहुत कठिनाई और भ्रष्टाचार फैल गया है। ऐसी सरकारी पाठशालाओं के प्रबन्धक/प्रशासक माता-पिताओं का साक्षात्कार लेते हैं, उनकी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति या हैसियत जानने का भरसक प्रयास करते हैं और उनके हजारों, लाखों रुपये डोनेशन या रिश्वत में खुलेआम माँगते हैं। अतः ऐसे माता-पिताओं और उन शालाओं के मध्य 'प्रेम और घृणा' (Love and Hate Relationship) का सम्बन्ध होता है। मजबूरी में सभी माता-पिताओं के ऐसे लालची अनैतिक शोषक विद्यालयों के मालिकों और प्रबन्धकों से शोषित होना ही पड़ता है। मजबूरी में ही वे P.T.A. (Parent Teacher Association) की मीटिंगों में भाग लेने जाते हैं।
- पाठशालाओं के शिक्षक/शिक्षिकाएँ विद्यार्थियों के घर/परिवार में कभी-कभी नहीं जाते—विशेषकर नगरों और कस्बों में। समयाभाव और जल्दी घर लौटने की प्रवृत्ति के फलस्वरूप ऐसा नहीं करते। गाँधी जी का कहना था कि शिक्षकों को विद्यार्थियों के घरों पर प्रायः जाना चाहिए और बुनियादी शालाओं के शिक्षकों के लिए ऐसा नियमित तौर से करना आवश्यक माना जाता था परन्तु अब यह प्रथा लुप्त हो गयी है।
- अधिकतर निजी और तथाकथित 'पब्लिक स्कूल' बार-बार विद्यार्थियों को बाध्य करते हैं कि वे अपने घरों से पैसा लाएँ—कई बहानों से—पिकनिक, प्रदर्शनी दिखाने, टूर पर जाने, स्कूल की सहायता करने आदि के नाम से। प्रायः सभी माता-पिता उनकी निरन्तर माँग से दुःखी ही होते हैं। अतः वे बेमन से, मजबूरी में, पैसा भेजते रहते हैं। सभी पब्लिक स्कूलों में यह प्रचलन है कि अपने जन्म-दिवस पर प्रत्येक विद्यार्थी को पाठशाला में बाँटने के लिए टॉफी, मिठाई, पैन/पेन्सिल/रबड़ आदि को ले जाने की अनिवार्य रस्म निभानी पड़ती है। 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस न केवल दिवाली पर विद्यार्थियों को येन-केन प्रकारेण बाध्य किया जाता है कि वे अपने कक्षा अध्यापक व विषय शिक्षकों के लिए कोई उपहार लेकर अवश्य जाएँ। माता-पिता शिक्षकों को प्रसन्न मुद्रा में रखने हेतु ऐसा भी करने के लिए बाध्य होते हैं।

पश्चिमी देशों में ऐसी अवांछनीय प्रवृत्तियाँ नहीं होतीं। वहाँ शिक्षकों में पाठशाला जाकर अपने सन्तानों की शिक्षा प्रगति को जानने की इच्छा और लगन होती है। उनमें शिक्षक किसी भी प्रकार का लोभ या भयजनित व्यवहार नहीं करते और उनके प्रयासों का स्वागत करते हैं।

(II) समाज में पाठशाला की भूमिका—गाँधी जी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कथन था—"*एक बुनियादी पाठशाला को समुदाय में अहिंसात्मक क्रान्ति लाने हेतु भाले की नोंक बनना चाहिए।*"

"A basic school should be the spearhead of a non-violent resolution in the community."

अतः शिक्षकों से यह आशा नहीं अपितु अनिवार्य माँग की जाती थी कि वे ग्रामीण व स्थानीय समुदाय में जाएँ, वहाँ के नेताओं व सभी स्तरों के लोगों से मिलें और उनकी जीवन-समस्याओं को हल करने में अपना अधिकतम योगदान दें—यह योगदान केवल मात्र सलाह देने का या मौखिक नहीं हो बल्कि यह श्रमदान व नागरिकों का विविध क्रियाओं में भागीदारी बने, सहयोग प्रदान करें। यह अत्यन्त आदर्श व उपयोगी विचार था। दुर्भाग्यवश अब यह हवा हो गया है। आज के भौतिकवादी युग में शिक्षक वर्ग भी व्यक्तिवादी, धनलोलुप और स्वार्थी हो गया है। निःस्वार्थ सेवा करने का भाव लुप्त हो गया है।

Scanned with CamScanner

(III) पाठशाला और समाज का परस्पर सम्बन्ध—इन दोनों के बीच सम्बन्ध को इस प्रकार से विश्लेषित किया जा सकता है—

(1) खुले दरवाजे वाला सम्बन्ध (Open Door Relationship)—इसमें पाठशाला अपने गेट/दरवाजे सदा खुले रखते हैं ताकि समुदाय के लोग अथवा उनके प्रधान पाठशाला में चिन्ता किसी बाधा, संकोच या घबराहट के आ सकें। ऐसा बहुत कम देखने में आता है।

(2) बन्द दरवाजे का सम्बन्ध (Close Door Relationship)—इसमें पाठशाला अपने गेट/दरवाजे सदा या अधिकतर बन्द ही रखता है, उस पर भीतर से ताला लगाकर रखता है ताकि समाज के लोग उसके भीतर न आ सकें, बहुत प्रयास करने और पाठशाला के प्रधान की स्वीकृति पाते ही वे भीतर जा सकते हैं। पाठशाला के प्रशासक यह कतई नहीं चाहते कि समाज व राजनीति के कोई भी प्रभाव बाहरी हस्तक्षेप के रूप में पाठशाला में घुसें। अंग्रेजों के काल में सभी पाठशालाओं में ऐसा था। आजकल प्रायः सभी कन्या विद्यालयों में ऐसा ही है।

(3) खुलने/बन्द होने वाले दरवाजे का सम्बन्ध (Swinging Door Relationship)—जैसे अफसर के कक्ष और उसकी स्टेनो टाइपिस्ट या सेक्रेटरी के कक्ष के बीच में और डॉक्टर और नर्स के कक्ष के बीच सुगमतापूर्वक खुलता हुआ आधा दरवाजा होता है, वैसा ही सम्बन्ध एक पाठशाला और बाह्य समाज के बीच हो सकता है। प्रजातन्त्र के आधुनिक युग में ऐसा सम्बन्ध प्रचलित हो गया है, क्योंकि कोई भी प्रधानाचार्य व शिक्षक अब किसी भी नेता और प्रभावशाली उत्पाती या हस्तक्षेप करने को लालायित उच्च अधिकारी व समाज के गणमान्य सरपंच, पंच, धनिक को पाठशाला में घुसने से रोक नहीं सकता। अन्यथा कुछ ही देर में घेराव, हड़ताल, मार-पीट, विधानसभा अथवा लोकसभा में या दूरदर्शन पर यह हंगामे के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

(IV) स्थानीय समाज पाठशाला के लिए क्या कर सकता है?—स्थानीय समाज पाठशाला को बहुत कुछ योगदान कर सकता है—

- धन, सामग्री की सहायता और उसको विकासोन्मुख ले जाना।
- शिक्षकों और विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के अनुभव।
- पाठशाला को नैतिक सहारा।
- पाठशाला के कार्यक्रमों में भाग लेकर उसकी मनोबल वृद्धि।
- पाठशाला के नये विचार, आदर्श, मूल्य, समाजीकरण के प्रभाव।
- शिक्षकों को ठहरने-रहने की सुविधा।
- विद्यार्थियों के मनोबल को बढ़ाना।
- पाठशाला के कर्मचारियों की कमजोरियों, बुरी आदतों, न पढ़ाने की प्रवृत्ति को रोकना।

(V) पाठशाला समाज के लिए कैसे योगदान दे सकती है?

- पाठशाला विद्यार्थियों के माध्यम से उनके माता-पिता व समुदाय को मूल्यों, दृष्टिकोणों, प्रेरणा, ज्ञान आदि के द्वारा प्रभावित कर सकती है।
- समुदाय में नागरिकता के गुण, मूल्यों व ज्ञान को प्रसारित कर सकती है।
- समुदाय के जीवन को सांस्कृतिक और नैतिक रूप से समुन्नत कर सकती है।
- सामाजिक व सांस्कृतिक कुरीतियों, बुराइयों, अन्धविश्वासों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकती है।
- माता-पिताओं और समुदाय के नेताओं को बालकों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बना सकती है।

Scanned with CamScanner

- माता-पिताओं को उनकी सन्तानों की शैक्षिक प्रगति, कठिनाइयों से अवगत करा सकती है और उनकी शिक्षा सम्भावनाओं (Educability) में अभिवृद्धि कर सकती है।

(VI) माता-पिताओं और समाज को शिक्षित करने और इनमें सहयोग प्राप्त करने की विधियाँ

पाठशाला निम्नलिखित विधियों, तरीकों से विद्यार्थियों, माता-पिताओं और समाज को शिक्षित कर सकती है और उनका सहयोग प्राप्त कर सकती है—

(1) घरों को जाना (Home visits)

(2) साक्षात्कार (Interview)

(3) समूह वाद-विवाद (Grant discussion)

(4) विचारगोष्ठी (Seminar)

(5) संरक्षक-शिक्षक मीटिंग (Parent-Teachers Meeting)

(6) माता-पिताओं, समुदाय के लोगों व नेताओं को पाठशाला में आमन्त्रित करना विशेष अवसरों सहपाठी क्रिया-कलापों में।

(7) पाठशालाओं में रेडियो प्रोग्राम।

(8) लोगों के कामों में परामर्श, सहायता देना, समुदाय के लोगों/नवयुवकों को व्यावहारिक परामर्श दे

(9) समुदाय में आयोजित धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यालय के छात्र-छात्राओं को ले जा उनके सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाना।

(10) शिक्षकों द्वारा प्रौढ़-शिक्षा केन्द्रों में कार्य करना।

Scanned with CamScanner